Pragvat Itihas Part 01

Folder No.	007259
Granth Name	Pragvat Itihas Part 01
Author	Daulatsinh Lodha
Publisher	Pragvat Itihas Prakashak Samiti
Edition	1
Year	1953
Pages	722

प्राग्वाट इतिहास भाग ०१

फोल्डर नं.	००७२५९
ग्रन्थ	प्राग्वाट इतिहास भाग ०१
लेखक	दौलतसिंह लोढ़ा
प्रकाशक	प्राग्वाट इतिहास प्रकाशक समिति
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९५३
पृष्ठ	७२२

मुख्य टाइटल

तेवीसवें तीर्थंकर भगवान् पार्श्वनाथ के पंचम पट्टधर श्रीमद् स्वयंप्रभसूरि ---------- १
उपदेष्टा श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी का संक्षिप्त परिचय ---------- ४
शाह ताराचन्द्र मेघराजजी का परिचय ---------- ९
शाह ताराचन्द्र मेघराजजी का वंशवृक्ष ---------- २३
शुभाशीर्वाद ---------- १
अभिप्राय ---------- २
भूमिका ---------- ३
प्रस्तावना ---------- १
साधन सामग्री ---------- ४१
विषय सूची---------- ५३
प्रथम खण्ड ---------- १
- महावीर के पूर्व और उनके समय में भारत ब्राह्मणवर्ग और क्रियाकाण्ड में हिंसावाद ---------- ३
- महावीर के निर्वाण के पश्चात् जैनाचार्यों के द्वारा जैनधर्म का प्रसार करना ---------- ६
- प्राग्वाटश्रावकवर्ग की उत्पत्ति ---------- ११
- प्राग्वाट प्रदेश ---------- १५
- शत्रुंजयोद्धारक परमार्हत श्रे. सं. जावड़शाह श्रेष्ठि भावड़ और उनकी पतिपरायणा स्त्री तथा उनकी निर्धनता ---------- १७
- पुत्ररत्न की प्राप्ति और उसकी शिक्षा ---------- २१
- सिंहावलोकन ---------- २६
- सामाजिक जीवन और आर्थिक स्थिति ---------- २७

द्वितीय खण्ड ---------- ३१
- वर्तमान जैन कुलों की उत्पत्ति-श्रावकवर्ग में वृद्धइ के स्थान में घटती ---------- ३१
- राजस्थान की अग्रगण्य कुछ पौषधशालायें और उनके प्राग्वाटज्ञातीय श्रावककुल ---------- ३८

प्राग्वाट अथवा पौरवालज्ञाति और उसके भेद ---------- ४१
प्राचीन गूर्जर मंत्री वंश ---------- ६१
महामात्य धवल का परिवार और उसका यशस्वी पौत्र महामात्य पृथ्वीपाल ---------- ७५
अनन्य शिल्पकलावतार अर्बुदाचलस्थ श्री विमलवसतिकाख्य श्री आदिनात जिनालय ---------- ८३
गूज्रसम्राट भीमदेव प्रथम का व्ययकरणमंत्री प्राग्वाटज्ञातीय जाहिल ---------- १००
वस्तुपाल के महामात्य बनने के पूर्व गुजरात ---------- ११३
खंभात के शासक के रूप में महामात्य वस्तुपाल और लाट के राजा शंख के साथ वस्तुपाल का युद्ध तथा
खंभात में महामात्य के अनेक सार्वजनिक सर्वहितकारी कार्य ---------- १२२
महामात्य वस्तुपाल का राज्य सर्वेश्वरपद से अलंकृत होना ---------- १३५
बाहरी आक्रमणों का अंत और अभिनव राजतंत्र के उद्देशअयों की पूर्त्ति ---------- १४४
धार्मिक विभाग और मंत्रीभ्राताओं के द्वारा विनिर्मित धर्मस्थान और उनकी आगम सेवायें ---------- १५७
प्राग्वाटवंशावतंस मंत्रीभ्राताओं के श्री नागेन्द्रगच्छीय कुलगुरुओं की परंपरा ---------- १७०
श्री अर्बुदगिरितीर्थार्थ श्री मंत्रीभ्राताओं की संघयात्रायें ---------- १७९
उज्जयन्तगिरितीर्थस्थ श्री वस्तुपाल तेजपालकी टूंक---------- १९४
महाराजा वस्तुपाल द्वारा श्री मल्लिनाथ खत्तक का बनवाना ---------- २०२
बृहत्तपगच्छीय सौवीरपायी श्रीमद् वादीदेवसूरि ---------- २१०
मय की सेवा करने वाले प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थ श्रेष्ठि देशल ---------- २२४
सिंहावलोकन ---------- २३८
राजनैतिक स्थिति ---------- २४४
तृतीय खण्ड ---------- २४९
न्यायोपार्जित स्वद्रव्य को मंदिर और तीर्थों के निर्माण और जीर्णोद्धार के विषयो में व्यय करके धर्म की
सेवा करने वाले प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थ ---------- २४९
वीरप्रसविनी मेदपाटभूमीय गौरवशाली श्रेष्ठि वंश ---------- २६२
श्री राणकपुरतीर्थ की स्थापत्यकला ---------- २७१
श्री सिरोहीनगरस्थ श्री चतुर्मुख आदिनाथ जिनालय का निर्माता कीर्त्तिशाली श्रीसंघमुख्य सं. सीपा और
उसका धर्म-कर्म-परायण परिवार ---------- २८४
तीर्थ एवं मंदिरो में प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थों के देवकुलिका प्रतिमाप्रतिष्ठादि कार्य ---------- २९३
श्री अर्बुदगिरितीर्थस्थ श्री लूणसिंहवसहिकाख्य श्री नेमिनाथ जिनालय में प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थों के
देवकुलिका प्रतिमा प्रतिष्ठादि कार्य ---------- ३००
श्री अचलगढ़स्थ जिनालयों में प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थों के देवकुलिका प्रतिमाप्रतिष्ठादि कार्य ---------- ३११
तीर्थादि के लिये प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थों द्वारा की गई संघ यात्रायें ---------- ३२१
श्री तपागच्छाधिराज श्रीमद् सोमसुन्दरसूरि वंश परिचय ---------- ३२५
श्री तपागच्छाधिराज श्रीमद् हेमविमलसूरि वंश परिचय और दीक्षा तथा आचार्यपद ---------- ३३५
तपागच्छीय श्रीमद् विजयाणंदसूरि वंश परिचय और दीक्षा ---------- ३४६
तपागच्छीय श्रीमद् विजयलक्ष्मीसूरी ---------- ३५२
लोंकागच्छीय पूज्य श्रीमल्लजी ---------- ३६२
श्री पूर्णिमागच्छाधिपति श्रीमद् महिमाप्रभसूरि वंश परिचय ---------- ३७२
श्री साहित्यक्षेत्र में हुये महाप्रभावक विद्वान् एवं महाकविगण ---------- ३७४
न्यायोपार्जित द्रव्य का सद्व्यय करके जैनवाङ्मय की सेवा करने वाले प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थ ---------- ३८०
विभिन्न प्रान्तों में प्रा. ज्ञा. सद्गृहस्थों द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाये ---------- ४०९
राजस्थान प्रान्त ---------- ४०९
अर्बुदप्रदेश (गूर्जर राजस्थान) ---------- ४२०
बनासकांठा (उत्तर गुजरात) ---------- ४३१

गूर्जर काठियावाड़ और सौराष्ट्र ---------- ४३४
भारत के विभिन्न प्रसिद्ध नगर ---------- ४८९
प्राग्वाटज्ञातीय कुछ विशिष्ट व्यक्ति और कुल ---------- ४९७
सिंहावलोकन ---------- ५१९७